डरपोक नहीं, अभय बनने की आवश्यकताः आचार्यश्री महाश्रमण केलवा में चातुर्मास, केन्द्रीय ज्ञानशाला प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर का समापन

केलवाः 19 सितम्बर

आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि आज के परिवेश में व्यक्ति को भयभीत और डरपोक बनकर जीवन व्यतीत करने की बजाय अभय और मुश्किलों से डटकर सामना करने की आवश्यकता है। सत्वहीन व्यक्ति हिंसा में प्रवृत होता है। जिसके पास अहिंसा का शौर्य है वह न कभी हिंसा करता है और न ही असत्य बातों का उपयोग करता है। अहिंसा और सत्य की साधना करनी है तो अभय की साधना आवश्यक है।

यह विचार तेरापंथ के 11वें अधिशास्ता आचार्यश्री ने सोमवार को यहां तेरापंथ समवसरण में चल रहे चातुर्मास के दौरान दैनिक प्रवचन में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि आदमी अपमान से डरता है और चोर–डाकुओं से डरता है। कभी कभी जीवों से भी भयभीत हो जाता है। विभिन्न प्रकार के डर सताते है। साधना के क्षेत्र में भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। भगवान महावीर स्वामी बहुत निडर थे। वे बाल्यावस्था से ही बडे निर्भीक थे। एक बार उन्होंने खेलते समय एक सर्प को हाथ से उठाकर उछाल भी दिया था। ऐसा महावीर ही कर सकते है। हर कोई नहीं। इसलिए माता–पिता से यह अपेक्षा है कि वह बचपन से ही अपने बच्चों को इस तरह के संस्कार देने का प्रयास करें कि उनका विश्वास कभी डगमगाए नहीं, बल्कि वे हर तरह की चुनौतियों का सामना करने में तैयार रहें। प्रायः देखा जाता है कि अभिभावक अपने बच्चों को किसी कारणवश डराते है। यह प्रवृति गलत है। इससे बच्चें के मन में भय बैठ जाता हैं, जो समय गुजरने के साथ समस्या खडी कर सकता है। इस तरह के उपायों से बचने की आवश्यकता है। बच्चों को भयभीत करने की बजाय सहजता से समझाया जाए तो ज्यादा अच्छा हो सकता है।

आचार्यश्री ने कहा कि विद्यार्थी जीवन और बचपन का शौर्य का समय बहुत महत्वपूर्ण है। बचपन से ही अभय होने की शिक्षा मिलनी चाहिए। अभय होने का मतलब यह नहीं कि वह शैतान हो जाए। किसी से डरे नहीं। अभय होने के साथ विनम्रता का विकास भी होना चाहिए। विनम्रता, ईमानदारी के संस्कार होने से तो जीवन सुन्दर बन सकता है। अच्छा आदमी जरूर बने, अच्छे संस्कार वाला बने यह आवश्यक है। इसके लिए माता–पिता और गुरुजनों का अनादर नहीं किया जाना चाहिए। भारतीय संस्कृति और

जैन ग्रंथों में इस बात का उल्लेख मिलता है कि विद्यार्थियों में ज्ञान की योग्यता जागृत हो। इसके लिए प्रयास करने की आवश्यकता है। उन्होंने प्रवचन में मौजूद विद्यार्थियों से कभी झूठ नहीं बोलने और हमेशा नशामुक्त रहने का संकल्प दिलाया।
मंत्री मुनि सुमेरमल ने कहा कि जीवन विश्वास पर टिका है। विश्वास जागृत होने पर ही कार्य का सफल क्रियान्वयन होता है। आदमी ज्ञान करता है और उसके बाद उस पर विश्वास मजबूत करता है तब क्रिया में ज्ञान जुडता है। सही निर्णय, शुद्ध निर्णय और सतत पुरुषार्थ यह त्रिवेणी विश्वास से एक जगह टिकने से ही फलीभूत होती है। व्यक्ति समस्याओं के समाधान के लिए अनेक देवताओं को धोकता है। अनेक गुरुओं के चक्कर लगाता है, परन्तु समाधान प्राप्त नहीं होता। समाधन तभी मिल सकता है जब हमारी श्रद्धा टिकाउ और मजबूत होगी। एक धारा के प्रति बहने वाली हमारी श्रद्धा हमें समस्याओं से जूझने की शक्ति देगी। उसके समाधान की सोच विकसित करेगी और चित्त को शांति का अनुभव कराएगी। इस अवसर पर मुंबई के पत्रकार आलोक भट्टाचार्य ने कहा कि मुंबई महानगरीय क्षेत्र के उपनगर डोंगीवली में ज्ञान शाला का एक केन्द्र पिछले सात वर्षों से संचालित किया जा रहा है। इसके माध्यम से अब तक साढे चार सौ युवतियों को आत्मनिर्भर और स्वावलंबी बनाने की दिशा में कार्य का क्रियान्वयन किया गया। अब भी अनेक युवतियों को जोडने का काम चल रहा हैं। इस मौके पर मुनि किशनलाल, देवीलाल कोठारी, राजनगर की पंछी चपलोत, नीला चींपड, दिनेश बाबेल, मुनि हिमांशकुमार और डालमचंद नौलखा ने भी विचार व्यक्त किए। संयोजन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

संस्कार प्रदान करने का मंच है ज्ञानशाला

केन्द्रीय ज्ञानशाला प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर का समापन

यहां भिक्षु विहार में चल रहा केन्द्रीय ज्ञानशाला प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर का समापन सोमवार को शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में हुआ। इस दौरान आचार्यश्री ने शिविरार्थियों को प्रेरणा देते हुए कहा कि ज्ञानशाला संस्कार प्रदान करने वाला एक मंच है। यह तेरापंथ समुदाय की अपनी गतिविधि है। इससे जुडना ही महत्वपूर्ण बात है। इसके सर्वव्यापीकरण में महिला समाज का बडा योगदान है। यह लगातात मेहनत कर रही है। अब सब ने प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया है। इसे बालको को संस्कारित करने में लगाने की आवश्यकता है।
मेवाड ज्ञानशाला के आंचलिक संयोजक देवीलाल कोठारी ने बताया कि तीन दिन तक चले इस शिविर में राजस्थान, उडीसा, गुजरात और मध्यप्रदेश राज्य के शिविरार्थियों ने

शिरकत की। शिविर को लेकर कोठारी व सह संयोजिका मंजू दक ने अनेक स्थानों की यात्रा कर तेरापंथी सभाओं, महिला मंडल, युवक परिषद एवं ज्ञानशालाओं के संचालकों से संपर्क कर प्रशिक्षणार्थियों को सूचीबद्ध किया। शिविर की सफल क्रियान्विति में प्रभारी मुनि उदित कुमार का निर्देशन और सह प्रभारी मुनि हिमांशु कुमार का मार्ग दर्शन प्राप्त हुआ। प्रशिक्षण के दौरान मुनि योगेश कुमार, मुनि पुलकित कुमार, उपासक प्रभारी डालिमचंन्द नौलखा, उपासक प्राध्यापक निर्मलकुमार नौलखा, शासनसेवी बजरंगलाल जैन ने तत्व ज्ञान, ज्ञानशाला सम्यक संचालन, अभिव्यक्ति कौशल, उच्चारण शुद्धि, जीवन विज्ञान, व्यक्तित्व विकास आदि अनेक विषयों पर प्रशिक्षण दिया। जिज्ञासा समाधान भी रोचक रहा। मौखिक परीक्षा द्वारा सहभागियों का मूल्यांकन किया गया। अन्य प्रांतों से आए शिविरार्थियों की आवासीय व्यवस्था को लेकर चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष महेन्द्र कोठारी, सह महामंत्री मूलचंद मेहता, मंत्री लवेश मादरेचा, प्रकाश चपलोत सभाध्यक्ष बाबूलाल कोठारी का सहयोग प्रशंसनीय रहा। समापन समारोह में मुनि हिमांशुकुमार, उपासक प्रभारी डालिमचंन्द नौलखा एवं आंचलिक ज्ञानशाला संयोजक ने विचारों की अभिव्यक्ति के साथ आभार ज्ञापित किया।

महिलाओं से किया संपर्क

आगामी 22 सितम्बर से शुरू होने वाले अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के 36 वें अधिवेशन की सफल क्रियान्विति को लेकर तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती फूली देवी बोहरा, मंत्री रत्ना कोठारी, स्नेहलता कोठारी, नीलू कोठारी, स्नेहलता बोहरा आदि ने केलवा में महिलाओं से संपर्क किया और अधिवेशन में अधिकाधिक संखा में उपस्थित रहने का आग्रह किया।

शुद्ध लक्ष्य के साथ किया उपवास सार्थकः आचार्यश्री महाश्रमण

केलवा में चातुर्मास, आचार्यश्री ने की यात्राओं की घोषणा, ज्ञानशाला प्रशिक्षक प्रशिक्षण शुरू, जीवन विज्ञान शिक्षक प्रशिक्षण शिविर का समापन, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल का अधिवेशन 22 से, तैयारियां शुरू

केलवाः 18 सितम्बर

शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण ने अन्ना हजारे की ओर से किए गए अनशन और गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शांति भाई चारे के लिए किए गए उपवासों का उल्लेख करते हुए कहा कि शुद्ध लक्ष्य के साथ किया गया उपवास सार्थक है। जैन समाज में लंबे–लंबे उपवास किए जाते है। 30 दिनों के उपवास काफी संख्या में प्रत्येक वर्ष होते है। जैनों की तपस्या आत्मा शुद्धि के लिए की जाती है। अन्नाजी ने देश के लिए अनशन किया। मौत को भी गले लगाने का संकल्प दिखाया। उसके साथ संयम और अहिंसा का रास्ता। यह बडी बात है। शांतिदूत ने बालमुनि गौरवकुमार करने पर साधुवाद देते हुए कहा कि बचपन में ही ऐसी तपस्या बहुत महत्वपूर्ण है। तपस्या के साथ मेरी सेवा भी की। यह इनकी दृढ मनोबल का परिचायक है।

तेरापंथ धर्मसंघ के 11वें अधिष्ठाता ने उक्त विचार रविवार को यहां तेरापंथ समवसरण में चल रहे चातुर्मास के दैनिक प्रवचन के दौरान हजारों की संख्या में मौजूद श्रावक समाज को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। आचार्यश्री ने भ्रष्टाचार के संदर्भ में कहा कि सरकार के लोग हो, प्रशासन का क्षेत्र हो या आम जनता। सब जगह भ्रष्टाचार व्याप्त है। भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए सघन प्रयास आवश्यक है। बचपन से ही नैतिकता, ईमानदारी के संस्कार विद्यालयों में दिए जाने चाहिए। युवाओं को जागरूकता रखनी होगी। व्यापार में धोखाधडी, गलत तौलमाप और बेईमानी पर स्वयं द्वारा ही लगाम रखनी होगी। भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए नशामुक्ति पर भी ध्यान देना जरूरी है। मैंने केलवा को नशामुक्त ग्राम बनाने का लक्ष्य दिया है। इस संदर्भ में कार्य हो रहा है। लोगों को प्रेरित करने का कार्य हो, शक्ति नियोजित हो तो सफलता मिल सकती है।

उन्होंने श्रावक–श्राविकाओं से हिंसा से दूर रहने का आह्वान करते हुए कहा कि यह व्यक्ति में तीन तरह से आती है। पहला आवेश में आना है। घरेलू हिंसा के प्रसंग अक्सर देखने और सुनने में आते हैं। हिंसा का दूसरा कारण अज्ञानता भी माना गया

है। जानकारी होने पर अनेक तरह की हिंसा से बचा जा सकता है। अभाव के कारण व्यक्ति आतंककारी भी बन सकता है। काम वासना और सत्ता को पाने के लिए हिंसा का रास्ता अपनाने की बात सामने आती है। काम और क्रोध की वृतियों से बचने पर हिंसा से बचा ज सकता है। दो मार्ग है हमारे सामने। एक अहिंसा का सीधा साधा और दूसरा हिंसा का मार्ग है। अहिंसा उद्‌भव गति का रास्ता है। परिवार में हिंसा न हो। संपति बंटवारे की छोटी–छोटी बातों में उलझना नहीं चाहिए। कोर्ट में जाने की अपेक्षा नहीं रहना चाहिए। त्याग और चेतना का विकास होना चाहिए। सहनशीलता की आवश्यकता है। पिता ने पुत्र को कुछ कह दिया, गुरु ने शिष्य को कुछ कह दिया तो उसे सहन करना चाहिए। पिता के प्रति पुत्र के भाव आदर से होने चाहिए। कभी डांट भी दिया तो उसे सहन करना चाहिए। अहिंसा के पालन के लिए जागरूकता रखें। धार्मिक स्थलों से जुडे स्थानों पर जमीकंद का उपयोग नहीं किया जाए। मंत्री मुनि सुमेरमल ने कहा कि सभी व्यक्ति यात्रा में है। यह लंबी यात्रा है। एक जन्म की नहीं जन्म जन्मों की यात्रा है। निर्विकल्प अवस्था जहां आ जाती है वहां मंजिल मिल जाती है। मन वचन की प्रवृतियों को छोडते है तो चंचलता को भी छोड दें। व्यक्ति को अनवरत रूप से धर्म की आराधना में लीन रहना चाहिए।

आचार्यश्री महाश्रमण 2015 से शुरू करेंगे लंबी पदयात्राएं

दिल्ली, उत्तरप्रदेश, बिहार, नेपाल, आसाम, बंगाल, उडीसा आदि प्रांतों के हजारों गांवों में अहिंसा, अनुकंपा, संयम व भाईचारे का संदेश प्रसारित करेंगे

केलवाः 18 सितम्बर

तेरापंथ के 11वें अधिशास्ता शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण 2015 से लंबी यात्राएं प्रारंभ करेंगे। वे दिल्ली में आचार्यश्री तुलसी की जन्मशताब्दी समारोह को सान्निध्य प्रदान`रने के बाद चातुर्मास की परिसम्पलता पर लंबी पदयात्राओं का आगाज करेंगे। आचार्यरी दिल्ली से पदयात्रा शुरू कर उत्तरप्रदेश, बिहार, नेपाल, आसाम, बंगाल, उडीसा आदि प्रांतों के हजारों गांवों में अहिंसा, अनुकंपा, भाई चारे का संदेश प्रसारित करेंगे। आज हजारों भक्तों की मौजूदगी में घोषणा करते हुए शांतिदूत ने कहा कि मैं भगवान महावीर का स्मरण और आचार्य भिक्षु, गणाधिपति तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ को वंदन करते हुए कहना चाहता हूं कि द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, स्वास्थ्य और संघीय स्थिति के अनुरूप रहने पर 2015 से पूर्वांचल की यात्रा प्रारंभ करूंगा और 2015 का मर्यादा

महोत्सव कानपुर में करने का भाव है। आचार्यश्री महाश्रमण की यात्राओं को लेकर लंबे समय से कयास लगाए जा रहे थे। अनेकों नगरों, महानगरों से संघों के साथ हजारों श्रावक उपस्थित होकर अर्ज प्रस्तुत कर रहे है। उन सबको ध्यान में रखते हुए आचार्यश्री ने दीर्घकाल से वंचित क्षेत्रों का स्पर्श करने की मंशा जाहिर की है।

उत्तरप्रदेश से अर्ज लेकर पहुंचा संघ

आचार्यश्री महाश्रमण की यात्रा को लेकर पूरे देश में चल रही चर्चा को ध्यान में रखकर उत्तरप्रदेश से बडी संख्या में भक्तों का संघ आज केलवा पहुंचा। शांतिदूत ने जोरदार अर्ज को ध्यान में रखते हुए कानपुर में मर्यादा महोत्सव एवं आगरा में स्पर्श करने की घोषणा की। इससे पूरा पांडाल जयकारों से गुंजायमान हो उठा।

कच्छ एवं अहमदाबाद से भक्त गुरु चरणों में

गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी की अर्ज लेकर कच्छ भाजपा के महामंत्री सहित कच्छ के दिग्गज भक्तों के नेतृत्व में बडी संख्या में श्रद्धालु केलवा पहुंचे। कच्छ के लोगों का उत्साह देखते ही बन रहा था। कच्छ के अलावा अहमदाबाद के लोग 13 बसों के साथ गुरु चरणों में पहुंचे। दोनों जगहों के लोगों ने आचार्यश्री से गांधी की भूमि पर पधारने की जोरदार अर्ज प्रस्तुत की। कच्छ भाजपा के महामंत्री पंकजभाई मेहता ने कहा कि मैं मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी की अर्ज लेकर आया हूं। मोदीजी चाहते है कि आप कच्छ गुजरात में पधारे और गुजरात की जनता में शांति अहिंसा का संदेश प्रवाहित करें। महामंत्री मेहता ने कहा कि कच्छ की धरती पर प्रकृति ने भी मेहरबानी की है। यहां पर आने वाले अफसर पहले कालापानी की सजा मानते थे, पर कच्छ अब कच्छ में आने के लिए लालायित रहते है। अब कच्छ की धरा पर आचार्यश्री की कृपा बरसेगी तो यहां शांति, भाईचारे एवं अहिंसा की फसल लहलहा सकेगी। इस अवसर पर कच्छ के मुनि अनंतकुमार ने जोरदार वकालात की। मंत्री मुनि सुमेरमल ने कच्छ की धरा पर पधारना उपयोगी बताया। अहमदाबाद से पहुंचे संघ का नेतृत्व तेरापंथ सभा के अध्यक्ष मदन कोठारी एवं प्रेक्षा विश्व भारती के बाबूलाल ने भाव अर्ज प्रस्तुत की। इस पर आचार्यश्री ने समय आने पर चिंतन करने का आश्वासन दिया।

महिला मंडल का अधिवेशन 22 से

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल का 36 वां अधिवेशन 22 से 24 सितम्बर तक केलवा की अर्हम वाटिका में आयोजित होगा। तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती फूली देवी बोहरा एवं मंत्री रत्ना कोठारी ने बताया कि तीन दिनों तक चलने वाले इस

अधिवेशन के दौरान विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की जाएगी। अधिवेशन में शिरकत करने वाली महिलाओं का नाथद्वारा स्थित गोकुलधाम में भी पंजयन किया जाएगा। अधिवेशन की तैयारियों को लेकर रविवार को महिला मंडल की सदस्याओं और पदाधिकारियों की बैठक हुई। इसमें व्यवस्थाओं को अंतिम रूप दिया गया। इस अवसर पर स्नेहलता कोठारी, नीलू कोठारी, स्नेहलता बोहरा आदि ने विचार व्यक्त किए।

प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर शुरू

केलवा जैन तेरापंथी महासभा द्वारा संचालित ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के अन्तर्गत आचार्यश्री महाश्रमण और प्रभारी मुनि उदितकुमार, सहप्रभारी मुनि हिमांशुकुमार के निर्देशन में त्रिदिवसीय ज्ञानशाला प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। पहले दिन शिविर में राजसमंद, रेलमगरा, नाथद्वारा, आसींद, आकोला, लावा सरदारगढ, भाणा, गंगापुर, आमेट, उडीसा, भीम, मध्यप्रदेश के जावद आदि क्षेत्रों के 80 से भी अधिक सदस्यों ने भाग लिया। शिविर में प्राध्यापक डालमचंद नौलखा एवं निर्मल नौलखा ने जैन तत्व विद्या पर विशेष जानकारी दी। मुनि उदितकुमार और मुनि हिमांशुकुमार ने प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि आज यहां से प्रशिक्षण प्राप्त करके जाने वाली बहनें अपने अपने क्षेत्रों में जाकर ज्ञानशाला को नियमित रुप से संचालित कर बच्चों को संस्कारित करने में योगभूत बनें। ज्ञानशाला आंचलिक सहयोग देवीलाल कोठारी, सह संयोजक मंजू दक ने स्वागत किया। संचालन दिनेश कोठारी ने किया। इस दौरान फतहलाल लोढा, प्रवीण कोठारी, विक्रमसिंह आदि ने व्यवस्था और पंजीयन में सहयोग किया।

तनाव को दूर करता है जीवन विज्ञान

कार्यशाला का समापन

प्रेक्षा प्राध्यापक मुनि किशनलाल ने कहा कि जीवन विज्ञान पूरे समाज के लिए अत्यंत उपयोगी है। यह जीवन में यदा कदा आने वाले तनाव को कम करने में सहायक सिद्ध होता है। यह विचार मुनिश्री ने जीवन विज्ञान कार्यशाला के समापन अवसर पर आयोजित समारोह में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि जीवन विज्ञान संस्कार के निर्माण और व्यक्तित्व के परिष्कार का महान उपक्रम है। इससे स्मृति में आशातीत विकास होता है और लक्ष्य को प्राप्त करने में सफलता मिलती है। शिविर में राजसमंद और नवी मुंबई के शिक्षकों ने हिस्सा लिया। इस अवसर पर महाराष्ट सरकार के पूर्व शिक्षा निदेशक वालचंद देसरे ने कहा कि जीवन विज्ञान का उपक्रम नवी मुंबई के 60 स्कूलों

में संचालित किया जा रहा है। अब इसे संपूर्ण पाठ्यक्रम के रूप में संचालित करने के प्रयास किए जा रहे है। इस शिक्षा से उनके एवं बच्चों के जीवन में आध्यात्म परिवर्तन आया है। शिविर के दौरान आयोजित परीक्षा में 55 शिविरार्थियों ने सफलता प्रापत की। इसमें केलवा के देवीलाल कोठारी सर्वाधिक अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान पर रहे। द्वितीय स्थान मिश्रीमल चौधरी और तृतीय स्थान भीलवाडा की सुनीता नागौरी ने प्राप्त किया। उदयपुर के अशोक कच्छारा ने अपने अनुभव प्रस्तुत करते हुए कहा कि प्रेक्षाध्यान का जीवन में उपयोग करने से आज वे जिन्दा है। व्यवस्था समिति के महामंत्री सुरेन्द्र कोठारी ने महाराष्ट के शिक्षा अधिकारी का स्वागत करते हुए प्रथम आने वाले शिविरार्थियों को साहित्य भेंट किया। आचार्यश्री ने शिविरार्थियों को आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि अब आप अपने–अपने क्षेत्रों में जाकर प्रयास करें और जीवन विज्ञान के लिए लोगों को प्रेरणा दें। नवीं मुंबई के अर्जुन सिंघवी ने भी विचार प्रकट किए।

वोराट को मिलेगा बोनस

तेरापंथ सभा चारभुजा के अध्यक्ष ललित चोरडिया के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मंडल ने रविवार को आचार्यश्री महाश्रमण के दर्शन कर वोराट क्षेत्र में दूसरा पडाव करने की अर्ज प्रस्तुत की। इस पर आचार्यश्री ने कहा कि रावलियां कलां जाते समय उनका यह पडाव वोराट क्षेत्र के श्रावक–श्राविकाओं के लिए लिए बोनस साबित होगा। वे आमेट से गोगुन्दा जाते समय यहां पडाव करें ऐसी उनकी भावना है। इस अवसर पर चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष महेन्द्र कोठारी, तेरापंथ सभा चारभुजा के मंत्री नरेन्द्र पटवारी, पारसमल सिंघवी, मिट्ठालाल पटवारी रमेश चंद्र हिंगड सहित सेवंत्री, चारभुजा और झीलवाडा के समाजजन उपस्थित थे।

जय जय

द्वारा आयोजित
कार्यशा
सान्निध्य : शांतिदूत आचा
18 सितम्बर 2011
दि. 13 से 1

कार्यशाला
विषय : संघीय संस्कार : जीवन का आधार
सान्निध्य : शांतिदूत आचार्य श्री महाश्रमणजी
18 सितम्बर 2011
वा (राज.)